# नमूने के प्रश्न–पत्र की योजना 2011 – 2012

कक्षा – वरिष्ठ उपाध्याय
विषय – न्याय दर्शनम्　　　　　　　　　　प्रश्न पत्र –
अवधि – 3.15　　　　　　　　　　　　　पूर्णांक – 80

1. उद्देश्य हेतु अंकभार –

| क्र.सं. | उद्देश्य | अंकभार | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | ज्ञान | 17 | 21.25 |
| 2. | अवबोध | 28 | 35.00 |
| 3. | अभिव्यक्ति | 30 | 37.50 |
| 4. | मौलिकता | 05 | 06.25 |
| योग | | 80 | 100 |

2. प्रश्नों के प्रकारवार अंकभार –

| क्र. सं. | प्रश्नों का प्रकार | प्रश्नों की संख्या | अंक प्रति प्रश्न | कुल अंक | प्रतिशत प्रश्नों का | संभावित |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | अतिलघूत्तरात्मक | 4 | 1 | 4 | 5.00 | 10 |
| 2. | लघूत्तरात्मक– I | 5 | 2 | 10 | 12.50 | 25 |
| 3. | लघूत्तरात्मक – II | 2,3,3 | 2½,3,4 | 5+9+12=26 | 32.50 | 45 |
| 4. | निबंधात्मक | 2,3 | 5,10 | 10+30=40 | 50.00 | 90 |
| | योग | 22 | | 80 | 100 | 170 |

विकल्प योजना : प्रश्न संख्या 21 व 22　　　　　　पुनरावलोकन :– 10 मिनट
प्रश्नपत्रपठन – 15 मिनट

3. विषय वस्तु का अंकभार –

| क्र.सं. | विषय वस्तु | अंकभार | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | प्रमाणम्, कारणम्, करणम्, सन्निकर्षः | 08 | 10.00 |
| 2 | अनुमानम्, उपाधिः, हेत्वाभासः | 10 | 12.50 |
| 3 | उपमानम्, अर्थापत्तिः, अभावः | 10 | 12.50 |
| 4 | प्रामाण्यवादः | 12 | 15.00 |
| 5 | न्यायसिद्धान्त मुक्तावली | 40 | 50.00 |
| | योग | 80 | 100 |

# प्रश्न–पत्र ब्ल्यू प्रिन्ट

कक्षा – वरिष्ठ उपाध्याय विषय :– न्यायदर्शन म् पूर्णांक – 80

| क्र. सं. | उद्देश्य इकाई / उप इकाई | ज्ञान | | | | अवबोध | | | | ज्ञानोपयोग / अभिव्यक्ति | | | | कौशल / मौलिकता | | | | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | अति. लघू | लघू | | निबं. | अति. लघू | लघू | | निबं. | अति. लघू | लघू | | निबं. | अति. लघू | लघू | | निबं. | |
| | | | **SA1** | **SA2** | | | **SA1** | **SA2** | | | **SA1** | **SA2** | | | **SA1** | **SA2** | - | |
| 1 | प्रमाणम्, कारणम्, करणम्, सन्निकर्षः | 2(2) | | | | | 6(3) | | | | | | | | | | | 8(5) |
| 2 | अनुमानम्, उपाधिः, हेत्वाभासः | 1(1) | 4(2) | | | | | 5(2) | | | | | | | | | | 10(5) |
| 3 | उपमानम्, अर्थापत्तिः, अभावः | 1(1) | | 9(3) | | | | | | | | | | | | | | 10(4) |
| 4 | प्रामाण्यवादः | | | | | | | 12(3) | | | | | | | | | | 12(3) |
| 5 | न्यायसिद्धान्त मुक्तावली | | | | | | | | 5(2) | | | | 30(3) | | | | 5(-) | 40(5) |
| | योग | 4(4) | 4(2) | 9(3) | | | 6(3) | 17(5) | 5(2) | | | | 30(3) | | | | 5(-) | **80(22)** |
| | कुल योग | 17(9) | | | | 28(10) | | | | 30(3) | | | | 5(-) | | | | **80(22)** |

विकल्पों की योजना :– प्रश्न संख्या 21 व 22

नोटः– कोष्ठक में बाहर की संख्या अंकों की तथा भीतर प्रश्नों की द्योतक है।

हस्ताक्षर

# माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

**नमूने का प्रश्न–पत्र**

**कक्षा– वरिष्ठोपाध्याय**

**विषय– न्यायदर्शनम्**

अनुक्रमांक ☐☐☐☐☐☐

**समयः 3.15 होराः** **पूर्णांक 80**

परीक्षार्थिभ्यः सामान्यनिर्देशाः –

1. सर्वे प्रश्नाः अनिवार्याः।
2. प्रत्येकं प्रश्नस्योत्तरमुत्तरपुस्तिकायामेव देयम्।
3. प्रत्येकं प्रश्नभागस्योत्तरं क्रमानुसारमेकत्रैव लेखितव्यम्।

---

| | | |
|---|---|---|
| 1. | कारणं कतिविधम् ? | 1 |
| 2. | कति प्रमाणानि भवन्ति ? | 1 |
| 3. | अनुमानप्रमाणस्य कति भेदाः ? | 1 |
| 4. | अभावः कतिविधः ? | 1 |
| 5. | प्रत्यक्षप्रमाणस्य किं लक्षणम् ? | 2 |
| 6. | कारणस्य किं लक्षणम् ? | 2 |
| 7. | कः सन्निकर्षः ? सः कतिविधः ? | 2 |
| 8. | हेत्वाभासः कः ? | 2 |
| 9. | परामर्शस्य किं लक्षणम् ? | 2 |
| 10. | अनुमानप्रमाणस्य स्वरूपं लिखत। | 2½ |
| 11. | मैत्रीतनयत्वश्यामत्वयोः कथमौपाधिकः सम्बन्धः ? | 2½ |
| 12. | उपमानप्रमाणस्य किं स्वरूपम् ? | 3 |
| 13. | 'अर्थापत्तिः' इत्यस्य स्वरूपं लिखत। | 3 |

14. अभावपदार्थं निरूपयत। 3

15. तर्कभाषानुसारेण 'स्वतः प्रामाण्यम्' वर्णयत। 4

16. न्यायाभिमतं प्रामाण्यवादस्य स्वरूपं विवेचयत। 4

17. नैयायिकदिशा 'परतः प्रामाण्यम्' निरूपयत। 4

18. तमसो पृथक् द्रव्यत्वे मीमांसकमतपूर्वकं सिद्धान्तपक्षं स्थापयत। 5

19. समवायस्य किं स्वरूपम् ? सविस्तरं विवेचयत। 5

20. कारणस्य भेदान् सविस्तरं प्रकटयत। 10

21. किं नामान्यथासिद्धम् ? कतिविधं च तत् ? लक्षणोदाहरणनिर्देशपूर्वकं विशदीक्रियताम्। 10

अथवा

न्यायसिद्धान्तमुक्तावलीदिशा सप्तपदार्थानां परस्पर साधर्म्यं निरूपयत।

22. जातिबाधकाः के दोषाः ? सोदाहरणं तान् विशदयत। 10

अथवा

क्षित्यादिद्रव्याणां परस्पर साधर्म्य–वैधर्म्ये निरूप्यताम्।

## उत्तरतालिका

## विषय– न्यायदर्शनम्

**पूर्णांक 80**

1. कारणं त्रिविधम्। 1

2. चत्वारि प्रमाणानि भवन्ति। 1

3. द्वौ भेदौ, स्वार्थं परार्थं च। 1

4. अभावश्चतुर्विधः। 1

5. साक्षात्कारिप्रमाकरणं प्रत्यक्षम्। 2

6. यस्य कार्यात् पूर्वभावो नियतोऽनन्यथासिद्धश्च तत्कारणम्। 2

7. प्रत्यक्षज्ञानहेतुरिन्द्रियार्थसन्निकर्षः। सः षड्विधः। 2

8. यस्य हेतुत्वं आभासमात्रं, न च तस्य हेतुत्वं भवति। सः हेत्वाभासः। अर्थात् हेत्वाभासः किंचित् साम्यवशात् हेतुवत् प्रतीयते। 2

9. व्याप्तिविशिष्टपक्षधर्मताज्ञानं परामर्शः। 2

10. लिंगपरामर्शोऽनुमानम्। येन हि अनुमीयते तदनुमानम। लिंगपरामर्शेण चानुमीयतेऽतो लिंगपरामर्शोऽनुमानम्। तच्च धूमादिज्ञानमनुमितिं प्रति कारणत्वात्। अग्न्यादिज्ञानं अनुमितिः। तत्करणं धूमादिज्ञानम्। 2½

11. 'यत्र यत्र मैत्रीतनयत्वं तत्र तत्र श्यामत्वम्' इति भूयो दर्शनं समानमवगम्यते तथापि मैत्रीतनयत्वश्यामत्वयोः न स्वाभाविकः सम्बन्धः किन्त्वौपाधिक एव तत्र शाकाद्यन्न–परिणामस्योपाधेर्विद्यमानतत्वात्, तथाहि श्यामत्वे मैत्रीतनयत्वं न प्रयोजकं किं तु शाकाद्यन्नपरिणतिभेद एव प्रयोजकः। 2½

12. अतिदेशवाक्यार्थस्मरणसहकृतं गोसादृश्यविशिष्टपिण्डज्ञानम्। यथा– गवयमजानन्नपि–नागरिको यथा गौस्तथा गवयः इति वाक्यं कुतश्चिदारण्यकात्पुरुषाच्छ्रुत्वा बनं गतो वाक्यार्थं स्मरन् यथा गोसादृश्यविशिष्टं पिण्डं पश्यति तदा वाक्यार्थस्मरण–सहकृतं गोसादृश्यविशिष्टपिण्डज्ञानमुपमानं उपमितिकरणत्वात्। इदं तु प्रत्यक्षानुमानसाध्यप्रमासाधकत्वात् प्रमाणान्तरमुपमानमस्ति।

3

13. अर्थापत्तिरपि पृथक प्रमाणमस्ति। अनुपपद्यमानार्थदर्शनात् तदुपपादकी भूतार्थान्तर कल्पनं 'अर्थापत्तिः'। तथा हि – पीनो देवदत्तो दिवा न भुङ्क्ते, इति दृष्टे श्रुते वा रात्रि भोजनं कल्प्यते। दिवाऽभुंजानस्य पीनत्वं रात्रिभोजनमन्तरेण नोपपद्यते। अतः पीनत्वान्यथा–नुपपत्तिप्रसूतार्थापत्तिरेव रात्रिभोजने प्रमाणम्। तच्च प्रत्यक्षादिभ्यो भिन्नम् ; रात्रि भोजनस्य प्रत्यक्षाद्यविषयत्वात्। 3

14. अभावो नाम षड्भावपदार्थव्यति रिक्तो निषेधमुखेन प्रतियमानो कश्चित् पदार्थविशेषः। तस्य लक्षणं यथा 'निषेधमुखप्रतीति विषयः अभावः' अर्थात् यः विषयः नेतिशब्देन प्रतीयते तदभावपदार्थः। यथा– 'घटः पटो न' 'भूतले घटो नास्तीति वा।' अत्र यत् प्रतीति विषय तन्नैवास्ति, अत एव तदभावविशिष्टमधिकरणमेव प्रतीत्या गृह्य। केचित् तु 'अभाव' नामकं पृथक्पदार्थमेव न स्वीकुर्वन्ति। नैयायिकास्तु अभावविशिष्टस्याधिकरणस्य सत्त्वात् तस्य सप्तमपदार्थत्वं स्वीकुर्वन्ति। 3

15. तर्कभाषानुसारेण स्वतः प्रामाण्यस्य स्वरूपं लेखनीयम्। 4

16. न्यायाभिमतं प्रामाण्यवादस्य स्वरूपं ग्रन्थानुसारं लेखनीयम्। 4

17. परतः प्रामाण्यस्य स्वरूपं ग्रन्थानुसारं लेखनीयम्। 4

18. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ग्रन्थानुसारेण करणीयम्। 5

19. ग्रन्थानुसारेण वर्णनीयम्। 5

20. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ग्रन्थानुसारेण वर्णनीयम्। 10

21. ग्रन्थाधारेण प्रश्नोत्तरं साधनीयम्। 10

अथवा

ग्रन्थोक्तदिशा उत्तरं लेखनीयम्।

22. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली ग्रन्थानुसारेण करणीयम्। 10

अथवा

ग्रन्थानुसारेण वर्णनीयम्।